ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – VI (Special Issues -I) Nov – Dec 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

इतिहास लेखन में चक्राकार सिद्धांत

डॉ व्यास सी. पी.

सहयोगी प्राध्यापक तथा इतिहास विभाग प्रमुख,

के. के. एम. कॉलेज, मानवत जि. परभणी, महाराष्ट्र

सार :

आदी काल से हि मानव की प्रकृती एक स्थान पार स्थिर नही रही. एस की वझ कुछ भी रहे हो. मानव की दिनचर्या पहले से हि चलायमान रही. मावव कही भी स्थिर नही रहा. मानव की हमेशा स्थिरी हमेशा चलायमान रही. कभी भोजन के लिये तो कभी हिंस्र जनावरो से स्वय को सुरक्षित रखने के लिये, तो कभी अपने आवास के लिये एस तरह कई कारणो से मानव का जीवन हमेशा चलायमान रहा है. इतिहास मानव जाती का अतीत है. मानव जाति के अतीत का अधिकांश भाग ऐसा है, जिसे प्रत्याहृत नहीं किया जा सकता. यहां तक कि जो लोग सर्वश्रेष्ठ गुण संपन्न होते हैं, वह भी अपने अतीत को पुनः नहीं रच सकते. प्राय मानव जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं, व्यक्ति, शब्द विचार और स्थान आते हैं, जो जिस समय घटित होते हैं, उस समय अपना कोई प्रभाव नहीं छोड़ते तथा उन्हें भुला भी दिया जाता है. इसी कारण मृत हो चुकी पीढ़ी के अनुभव जिनमें से अधिकांश का कोई नहीं होता और यदि होता भी है तो वह इतिहासकार के सामने नहीं आ पाता. प्राचीन काल में हमारे देश में इतिहास लेखन की धार्मिक विचारधारा प्रवृत्ति पुराण, वेद, उपनिषद ब्राह्मण ग्रंथ एवं हमारा इतिहास छिपा हुआ है किंतु इतनी महत्वपूर्ण सामने नहीं आ सका. जितना आना चाहिए था, ना वह उजागर हो पाया इसका कारण यही रहा है कि वह समय के साथ-साथ विस्मृत होता गया. इतिहास आत्मज्ञान का साधन भी है स्वयं को जानने का अर्थ भी है यह जानना कि पूर्व में व्यक्तियों ने क्या किया, क्या गलत किया और हम क्या सही कर सकते हैं तब तक नहीं जान सकते जब तक हम पूरे इतिहास को जानने की कोशिश ना करें. इसीलिए कहना है कि मनुष्य क्या कर सकता है. यह जाने का एक साधन उसे यह जानना है जो उसने किया है इस प्रकार इतिहास मनुष्य के अनुभवों की कहानी और मौलिक होनी चाहिए तथा उसमें इतिहासकार की नहीं होनी चाहिए. ***कुंजी*** *– इतिहासलेखन - अर्थ – चक्राकार सिद्धांत*

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रास्ताविक: इतिहास की प्राचीनता देखी जाये तो इतिहास आदी और अनंत है. इसी लिये इतिहास को सभी विषयो की जननी मना जाता है. सृष्टि के आरंभ से ही इतिहास जुड़ा हुआ है. जिसमें सृष्टि का निर्माण मानव का दिन जीवन

उसका विकास कला, स्थापत्य, राजनीति, अर्थ आदि से संबंध रहा है. इतिहास को विश्व के हर विषयों की जननी माना जाता है. क्योंकि हर विषय को अपना एक इतिहास होता है उसे जानने के लिए हमें हर उस विषय के पुराने संदर्भों को टटोलना होता है यानी उस विषय के इतिहास में जाना होता है इसीलिए इतिहास विषय को विश्व के सभी विषयो कि जननी माना जाता है. भौतिक संसार में प्रकृति ही सत्य होती है. मानव प्रकृति का ही एक हिस्सा होता है. मानव जीवन के विकास में प्रकृति का ही योगदान रहा है. मानव ने प्रकृति में जीने के सिद्धांत पर ही अपने जीवन की रक्षा की तथा अपनी संतति की रक्षा भी की है. प्रकृति से लड़कर मानव ने अपना इतिहास बनाया है. जो समय के साथ ही बदलता रहा. मानव ने स्वयं को पृथ्वी का पुत्र न बनकर उसके मालिक होने की भूमिका निभाई है. मानव को विकास परिवर्तन की पसंद है वह पृथ्वी की पूर्ण शक्ति का दोहन कर आकाश की ओर बढ़ रहा है. उसने विज्ञान की चरम सीमा को छू लिया है. मानव का क्लोन बनाकर स्वयं को ईश्वर के सक्षम खड़ा कर दिया है. इसके साथ ही मानव ने प्रकृति में परिवर्तन कर जीवन को पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया भी प्रारंभ कर ली है. प्रकृति ही जीवन है और शिक्षा परिवर्तन अनूपपुर का एक सशक्त साधन एवं माध्यम रहा है प्रकृति के दो आयाम है जिनमें शिक्षा एवं विज्ञान का अंतरभाव है मानव को दोनों की ही जरूरत होती है. मानव विकास की प्रक्रिया में दोनों का संगम महत्वपूर्ण होता है. विगत कुछ वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं. मानव अपनी भावी पीढ़ी को अपना स्वर्णिम एवं उन्नत मानव इतिहास शिक्षा के द्वारा ही बता सकता है.

इतिहास का अर्थ: “NO Documents, No History” एखाद घटना का प्रमाण नही, तो इतिहास नही इसी पर इतिहास की सत्यता निर्भर होती है. वैसे तो इतिहास का अर्थ बतानेवाली कई संकल्पनाये है. कई विद्वानोंने, इतिहासकारोंने, लेखकोंने, संशोधन करनेवाले व्यक्तियोंने अपने विचारो और लेखन द्वारा इतिहास विषय की अलग-अलग प्रकार की व्याख्या प्रस्तुत की है. भूतकाल में घटित घटनाओं का वर्णन अर्थात जो घटनाएं है या गतिविधियां पहले हो चुकी हैं उनका प्रस्तुतीकरण ही इतिहास होता है. वैसे तो इतिहास का अंग्रेजी समानार्थी शब्द History से लिया गया है. सामान्य तौर पर देखा जाए तो इतिहास शब्द का अर्थ मानव जाति का अतीत है. इतिहास केवल तिथियों या तारीखों का ही संग्रह मात्र नहीं है, अपितु अंग्रेजी में इतिहास के लिए हिस्ट्री शब्द का प्रयोग किया जाता है जो कि एक शब्द ‘हिस्टोरिया’ से बना है. ‘हिस्टोरिया’ का अर्थ ‘सत्यान्वेषण’ है. यानी सत्य की खोज करना है. शब्दकोश के अनुसार इस शब्द का अर्थ सार्वजनिक घटनाओं का लेखन होता है. मानव जीवन के उद्गम शुरुआत तथा विकास भी मानते हैं. सामान्य रूप से देखा जाए तो बीते हुए समय की घटनाओं का सत्यान्वेषण वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर करना ही इतिहास होता है. इसमें विविध घटनाएं, समय, काल, इसवी सन, व्यक्ति व्यक्ति, नाम, शासक, शासकों के नाम, राजसत्ताओ के नाम, युद्ध, घटनाओं का समूह, घटनाओं के घटित होने के कारण, उसके परिणाम आदी का संचय होता है. एसिलिए इतिहास विषय को अनन्य साधारण महत्व होता हे. इतिहास विषय का अध्ययन करना हमें आवश्यक जान पड़ता है. क्योंकि इतिहास विषय में पूर्व गठित बातों, घटनाओ का

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – VI (Special Issues -I) Nov – Dec 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

लेखा-जोखा होता है. इसकी वजह से पूर्व अनुभव को जानकर मनुष्य वर्तमान अच्छे ढंग से ज्ञापित कर सकता है और भविष्य अच्छा बनाने कि कोशिशकर सकता है. इतिहास विषय अध्ययन करने की कुछ आवश्यकताएं हैं. जिसमें मानवीय अध्ययन करना, व्यक्ति और समाज का अध्ययन करना, इतिहास विषय हमारा मार्गदर्शक रहा है.

इतिहास की रचना का अर्थ होता है 'इसे करना'. इतिहासकार का प्रमुख कर्तव्य अतीत की घटनाओं को प्रकाश में लाना होता है. घटनाओं के परस्पर संबंध को दिखाना और उनकी व्याख्या करना होता है. इस प्रकार इतिहास अतीत में स्थित मानव समाज के विकास का व्याख्यात्मक वर्णन होता है. सभी ऐतिहासिक वृतांत एक साथ संश्लेषण एवं अनुमान दोनों होते हैं. सभी ऐतिहासिक आख्यान अनुमान होते हैं . इतिहास किसका होता है. व्यक्तियों के कार्यों का, राष्ट्रों का, राज्यों का, माननीय परिवर्तनों का, सामाजिक परिवर्तनों का, सांस्कृतिक परंपराओं का अथवा सभ्यताओं का? जहां पूर्व में व्यक्ति को ही इतिहास में केंद्रीय स्थान प्राप्त होता था, अब इतिहासकार प्राय: इस बात पर एकमत है कि इतिहास मुख्यतः समाजाश्रित होता है, न कि व्यक्ति -आश्रित. वर्तमान युग सामान्य जनता का युग माना जाता है. उस में विशिष्ट व्यक्तियों का महत्व राज्य तंत्र अथवा कुलीन तंत्र की अपेक्षा कम हो जाता है. वास्तव में इतिहास संस्कृति में अनुप्राणित समाज का होता है. इतिहास ही समाज का भविष्य होता है, ना ही भविष्यहीन समाज का इतिहास होता है. कि वर्तमान में जीने वाले समाज के पास न तो इतिहास होता है, नहीं भविष्य और वर्तमान होता है. वह तो मात्र एक कल्पना होती है- वास्तविकता के स्तर पर मात्र एक प्रक्रिया होती है, जो पकड़ में आने के साथ-साथ से छूट जाती है ऐसा भी माना जाता है. जो की पकड़ में आने के साथ-साथ हाथ से छूट भी जाती है. इतिहास की लालसा का विस्तार एक उपलब्धि होती है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय जातियां प्रगति का पद खोजने एवं प्रशस्त करने में व्यस्त होती है. जब किसी देश की जातियां अपनी- अपनी भाषा में मोहित इतिहास- चिंतन- लेखन को प्रस्तुत करने लगती है, तो भय और आनंद, संकट और संतोष, बना और तनाव एक साथ आकर उपस्थित होते हैं, क्योंकि एक और प्रगतिशील शक्तियां अपने उभार को प्रमाणित करती है तो दूसरी ओर उस के दुश्मन अपनी ऐतिहासिक शक्तियों को भी बुलावा देते है. इतिहास लेखन इस टकराव को दर्शन के बिना नहीं झेल सकता. इतिहास का लेखन मुख्यता उसपर निर्भर करता है कि, इतिहास की व्याख्या किस सिद्धांत के आधार पर की गई है. उसका दृष्टिकोण क्या रहा था इस प्रकार इतिहासलेखन के अब तक प्रमुख सिद्धांत आगे आये है, जिनमें 1. चक्राकार दृष्टिकोण, 2. ईश्वरीय दृष्टिकोण, 3. प्रगति दृष्टिकोण. इसमे हम यहा चक्राकार दृष्टीकोन पर प्रकाश डालेंगे. चक्राकार का अर्थ ही चक्र की तरह गतिमान एव अविरत चलने वाला होता है.

इतिहासलेखन मे चक्राकार सिद्धांत:

मानव जीवन मे इतिहास का बडा महत्व रहा है. विश्व सत्र पार देखा जाये तो पाश्चात्य संस्कृति में चक्राकार सिद्धांत का अस्तित्व हीरोदोटस के काल से हुआ है. इस दृष्टिकोण के अनुसार समस्त मानवीय घटनाएं एक चक्र के रूप में होती हैं नाम तिथि एवं व्यक्ति परिवर्तित हो सकते हैं, अपितु क्रम के अनुसार जो पहले हुआ था वही पुन: होगा और उसे कारण भी वही होंगे यह तत्व राष्ट्र, राज्य, युवा, व्यक्तियों सभी पर निर्भर

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – VI (Special Issues -I) Nov – Dec 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

होता है. इस प्रकार यह सिद्धांत किस उस तत्व का समर्थन करता है कि इतिहास स्वयं की पुनरावृत्ति होती है. प्राचीन काल में यह सिद्धांत प्रभावशाली था. क्योंकि लोग ब्रह्मांड की वास्तविकता से अवगत है. उस दौर में व्यक्ति अपनी भूमिका से परिचित नहीं थे और वर्तमान अपेक्षाकृत वहीं था. यह सिद्धांत मानव जीवन में कोई योगदान नहीं करता. इस सिद्धांत का महत्व यह रहा कि वह इतिहास का पहला ज्ञात सिद्धांत रहा है. कालांतर में दूसरी अवधारणाओं को अपने में सम्मिलित कर लिया. प्राचीन संस्कृतियों में यह अवधारणा नेत्र की भ्रांती मानव इतिहास एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार होती है. इसका लक्ष्य निश्चित है तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति तक की विकास प्रक्रिया में आने वाली विशिष्ट अवस्थाएं भी अंकित होती है. चक्राकार संकल्पना के बारे में सोचा जाए तो काल विभाजन के प्रसंग में चक्राकार विचार प्राचीन भारतीय सभ्यता की ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन चिंतन धाराओं में समान स्वरूप स्वीकृत दृष्टिगत होता है. ब्राह्मण विचारधारा में चक्राकार सिद्धांत का प्रारंभ हुआ. अत्यंत प्राचीन काल से ही दृष्टिगत होता है. समय-समय पर विश्व का उद्भव को विनाश' उत्थान और पतन' की परिकल्पना अत्यंत प्राचीन है तथा अथर्ववेद में यह स्पष्ट होता है या वक्त के साथ संबंध हो गई भारतीय संस्कृति में मानव इतिहास की चार विशेषताएं हैं. जो चार युगों नामों से अभीहीत है. (कृत, त्रेता, व्द्वापर एवं कली). वैसे ही विश्व स्तर पर चक्राकार सिद्धांत को मान्यता है. यूनानी रोमन अवधारणाओं के अंतर्गत चक्राकार सिद्धांत के संदर्भ में किसी और का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण आ रहा है. उन्होंने चार युगों की परिकल्पना की और युगों के नाम चार धातुओं के नाम से जोडे है- जिनमें सुवर्ण युग, रजत युग, काश्य युग, लोह युग माने है. यूको का यह सिद्धांत है समय के चक्रवर्ती विकास के सिद्धांत के साथ इस मान्यता पर आधारित था कि जैसे रात और दिन का चंद्रमा के वर्तमान तथा श्रीमान पक्ष का, इसी तरह ब्रह्मांड में भी परिवर्तन की इसी प्रकार की सकारात्मक प्रक्रिया संचालित रहती है. यूनानी और रोमन चिंतन में यह सिद्धांत पहले से ही ज्ञात था. इस तरह से सर्वाधिक चर्चा प्लेटो के विभिन्न परिसरों में भी मिलती है. दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में चक्राकार सिद्धांत की विचारधारा में आगामी समय के संबंध में भविष्य युक्तियां की गई, वैसे ही यूनानी- रोमन चक्राकार सिद्धांत समय- समय पर कुछ संशोधनों के साथ निरंतरता से बना रहा. ईसाई धर्म के अभ्युदय के उपरांत सैंट अगस्टीन यह पहला व्यक्ति था जिसने मनुष्य के इतिहास में 7 अवस्थाओं का स्पष्ट उल्लेख किया, तत्पश्चात सभी धर्म शास्त्री अगस्टीन की युग व्यवस्था से प्रभावित रहे. १७ वी शताब्दी में चक्राकार सिद्धांत पर विचार करते हुए बोसुए सेंट अगस्टीन द्वारा प्रतिपादित 7 युगो को स्वीकार करता है. उनके अनुसार प्रथम युगों का समय विस्तार आदम से नोआ तक है, दूसरा युग नोआ से अब्राहम तक, तीसरा योग अब्राहम से मोजेज तक, चौथा युग मोजेज से सोलो मन तक, पांचवा युग बेबी लोन की दासता का, छटा युग साइरस से जीसस तक तथा सातवा योग जीसस के जन्म से वर्तमान तक माना. कई अन्य विद्वानों ने इस सिद्धांत के बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं जिनमें ओसवाल्ड स्पैंगलर, तोयनबी के विचार महत्वपूर्ण माने जाते हैं .

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है. जिस प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर

होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं. मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार, उनकी पुरावृत्ति और संस्कृति होती रहती है. प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास से उनका समाधान ढूंढ़ता रहता है। इसीलिए प्रत्येक युग, समाज अथवा व्यक्ति इतिहास का दर्शन अपने प्रश्नों के दृष्टिबिंदुओं से करता रहता है. यह सब होते हुए भी साधनों का वैज्ञानिक अन्वेषण तथा निरीक्षण, कालक्रम का विचार, परिस्थिति की आवश्यकताओं तथा घटनाओं के प्रवाह की बारीकी से छानबीन और उनसे परिणाम निकालने में सर्तकता और संयम की अनिवार्यता अत्यंत आवश्यक है. उनके बिना ऐतिहासिक कल्पना और कपोलकल्पना में कोई भेद नहीं रहेगा. इतिहास की रचना में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उससे जो चित्र बनाया जाए वह निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर दृढ़ता से आधारित हो. मानसिक, काल्पनिक अथवा मनमाने स्वरूप को खड़ा कर ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा उसके समर्थन का प्रयत्न करना अक्षम्य दोष होने के कारण सर्वथा वर्जित है. यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि इतिहास का निर्माण बौद्धिक रचनात्मक कार्य है अतएव अस्वाभाविक और असंभाव्य को प्रमाणकोटि में स्थान नहीं दिया जा सकता. इसके सिवा इतिहास का ध्येयविशेष यथावत् ज्ञान प्राप्त करना है. किसी विशेष सिद्धांत या मत की प्रतिष्ठा, प्रचार या निराकरण अथवा उसे किसी प्रकार का आंदोलन चलाने का साधन बनाना इतिहास का दुरुपयोग करना है. ऐसा करने से इतिहास का महत्व ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् उपकार के बदले उससे अपकार होने लगता है जिसका परिणाम अंततोगत्वा भयावह होता है. एसिलिए इतिहास का सत्यान्वेशन होना और उसका सही तरह से लेखन होना आवश्यक होता है. तभी सत्य इतिहास सभी के सामने आ सकता है.

संदर्भ:

1. माणिकलाल गुप्त डॉ., 2002, इतिहास स्वरूप, अवधारणाये एवं उपयोगिता, एटलान्तिक पब्लिशर्स एंड डीस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 27
2. कार ई.एच., 1994, ई.एच.कार इतिहास म्हणजे काय? अनुवाद प्रा.वी.गो.लेले, अनिरुद्ध अनंत कुलकर्णी, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पुणे-३०
3. माथुर एस.के.डॉ., त्रिपाठी डी.सी.डॉ., इतिहास-लेखन कि अवधारणाये एवं आधुनिक विचारधारा, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपूर-15
4. पोंचल एच.सी. डॉ., बघेला एच.एस.डॉ., इतिहास के सिद्धांत एवं पद्धतीया, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपूर-15
5. गुप्त माणिकलाल डॉ.,2007, इतिहास-लेखन, धारणाये एवं पद्धतीया, साहित्य रत्नालय, कानपूर
6. व्यास प्रकाशचंद्र डॉ, 1999 जून, इतिहास लेखनशास्त्र, अभिजित पुब्लीकेश्न्स, लातूर
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Historiography आदी

Cite this Article:

Dr. Vyas S.P. (2023). ***इतिहास लेखन में चक्राकार सिद्धांत***, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XII (Number VI, pp. 361–365). Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.10464717